Three days workshop on Modern trends in Research methodology at Law school
(21-23 November 2023)

News link :- **https://www.grenonews.com/?p=76915** Thursday, May 16, 2024

Grenonews.com
हर खबर पर हमारी नजर

Education

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय कार्यशाला का हुआ सफल आयोजन, शोध प्रक्रिया में होगा नवाचार

November 23, 2023 Rajesh Mishra Greno news team

बोधिसत्व डॉ. बी.आर. अंबेडकर लाइब्रेरी, स्कूल ऑफ लॉ, जस्टिस एंड गवर्नेंस, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ने भारत डिजिटल अकादमी, अलीगढ़ के सहयोग से 21 से 23 नवंबर, 2023 तक माननीय कुलपति रविन्द्र कुमार सिन्हा के मार्गदर्शन मे "अनुसंधान पद्धति में आधुनिक रुझान" पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों पर ध्यान देने के साथ प्रतिभागियों को अनुसंधान पद्धति में नवीनतम रुझानों का अवलोकन प्रदान करना है।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुई। कार्यशाला के सम्मानित अतिथियों का स्वागत और अभिनंदन अधिष्ठाता डॉ. कृष्ण कांत द्विवेदी ने किया। अधिष्ठाता डॉ. कृष्ण कांत द्विवेदी स्कूल ऑफ लॉ, जस्टिस एंड गवर्नेंस ने शोध भाषा के रूप में हिंदी को लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता पर जोर देने के साथ शोध में भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। उनके बाद गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के डीन अकादमिक प्रोफेसर एनपी मलखानिया ने शोध में नैतिकता के मूल्य पर प्रकाश डाला और छात्रों को अपने शोध के दौरान कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य अतिथि जीबीयू के रजिस्ट्रार डॉ. विश्वास त्रिपाठी ने कानून के क्षेत्र में शोध के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपना शोध जारी रखने और अपने निष्कर्षों को व्यापक समुदाय के साथ साझा करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के अंत मे डॉ. माया देवी, डिप्टी लाइब्रेरियन, डॉ.बी.आर. के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ। ज्ञापन में डॉ. देवी ने कार्यशाला आयोजित करने और प्रतिभागियों को क्षेत्र के विशेषज्ञों से सीखने का अवसर प्रदान करने के लिए आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला के पहले तकनीकी सत्र का उद्घाटन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नौशाद अली ने किया, अपने संबोधन में प्रो. अली ने कानून के क्षेत्र में अनुसंधान पद्धति के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शोध पद्धति का चुनाव शोध प्रश्न और एकत्र किए जा रहे डेटा के प्रकार पर निर्भर करता है। कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिष्ठित वक्ताओं प्रोफेसर नाज़िम और डॉ. राज कुमार भारद्वाज के नेतृत्व में अकादमिक लेखन और अनुसंधान अनुदान प्रस्ताव लेखन पर गहन चर्चा हुई।

दूसरे दिन के पहले तकनीकी सत्र में प्रोफेसर नाज़िम ने "अकादमिक लेखन और इसके प्रभाव को बढ़ाने" पर व्याख्यान किया । उन्होंने मजबूत शोध डिजाइन पर जोर दिया, जिसमें शोध प्रश्न तैयार करने, साहित्य समीक्षा करने और उचित पद्धतियों का चयन करने की बारीकियों को शामिल किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को शैक्षणिक और व्यक्तिगत चुनौतियों पर काबू पाने के लिए आत्म-प्रभावकारिता की भावना को विकसित करने को प्रोत्साहित किया।

इसके बाद, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. राज कुमार भारद्वाज द्वारा एक सत्र आयोजित किया गया जिसमें उन्होंने "अनुसंधान अनुदान प्रस्ताव लेखन" विषय पर बात की उन्होंने अनुदान प्रस्ताव लिखने की जटिल प्रक्रिया को गहराई से समझा। वक्ता ने दीर्घकालिक प्रभाव वाली परियोजनाओं को डिजाइन करने के महत्व और अनुदान अवधि के बाद भी निरंतर समर्थन की संभावना को रेखांकित किया। कार्यशाला के अंतिम दिन दो तकनीकी सत्र आयोजित किये गये। श्री रफीक ने पहले सत्र में अनुसंधान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आधुनिक तकनीक की भूमिका पर बात की। उन्होंने प्रतिभागियों को चैटजीपीटी और बार्ड जैसे एआई उपकरणों का प्रभावी उपयोग करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने उन्हें यह भी आगाह किया कि वे उन पर बहुत अधिक निर्भर न रहें क्योंकि इससे उनके रचनात्मक कौशल में बाधा आ सकती है।

दूसरे सत्र में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की डॉ. मनोरमा त्रिपाठी ने आधुनिक शोध में नैतिक विचारों पर चर्चा की। उन्होंने शोध में विभिन्न नैतिक मुद्दों पर प्रकाश डाला जैसे कि साहित्यिक चोरी से कैसे बचें और प्रकाशन के लिए प्रेडेटरी पत्रिकाओं से कैसे बचें। समापन सत्र में, श्री आर बी शर्मा ने छात्रों को संबोधित किया और समाज की स्थिति में सुधार के लिए कड़ी मेहनत के महत्व पर बात की। उन्होंने मौलिक कर्तव्यों के महत्व पर विशेष रूप से उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के कर्तव्य पर जोर दिया। कार्यशाला में संकाय सदस्यों, अनुसंधान विद्वानों और विभिन्न विषयों के छात्रों ने भाग लिया। प्रतिभागी सक्रिय रूप से चर्चा में शामिल रहे और कार्यशाला को जानकारीपूर्ण और मूल्यवान पाया। कार्यक्रम में संकाय के सभी सदस्य, अनुसंधान विद्वान और विभिन्न विषयों के शोधकर्ता छात्र शामिल रहे।